IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

परिवार के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

▪ प्रतिभा यादव

सारांश

परिवार समाज का लघु रूप है। गृह में ही शिशु रूप से बच्चे का पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा एवं संस्कार प्रदान किये जाते हैं। गृह में रहकर वहाँ के गृह–वातावरण और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार से बालक में मनोवांछित श्रेष्ठ गुणों का सहज विकास होता है। परिवार के सदस्य मिलकर पारिवारिक वातावरण का निर्माण करते हैं।
प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने उद्देश्य के रूप में 1.शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन। 2.शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों के मध्य कोई सार्थक अतर नहीं है। प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने ग्वालियर नगर के मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल से मान्यता प्राप्त शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 के 400 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि संयुक्त परिवार व एकल परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है। संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम निरंतरता के अलावा सभी आयामों में दोनों समूह के मध्य सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

▪ शोधार्थी, आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययन शाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

परिवार समाज का लघु रूप है। गृह में ही शिशु रूप से बच्चे का पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा एवं संस्कार प्रदान किये जाते हैं। गृह में रहकर वहाँ के गृह–वातावरण और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार से बालक में मनोवांछित श्रेष्ठ गुणों का सहज विकास होता है। परिवार के सदस्य मिलकर पारिवारिक वातावरण का निर्माण करते हैं। विगत एक शताब्दी में परिवार के भौतिक और मनोवैज्ञानिक स्वरूप में परिवर्तन हुये हैं। स्वार्थवाद की भावना, अधिक महत्वकांक्षा, आधुनिकीकरण, नगरीकरण आदि के कारण संयुक्त परिवार विखण्डित होकर एकाकी परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं। आधुनिक परिवार में मुखिया का महत्व कम होता जा रहा है। पारिवारिक सदस्यों में परहित की भावना कम होती जा रही है व सम्बन्धों में औपचारिकता बढ़ रही है। संयुक्त परिवार में एक पीढ़ी से अधिक पीढो के लोग एक साथ रहते हैं जबकि एकल परिवार में पति–पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे साथ में रहते हैं। एकल परिवार में व्यक्ति की प्रधानता तथा कम नियंत्रण होता है। जबकि संयुक्त परिवार में सामूहिक हित पर अधिक ध्यान दिया जाता है और कठोर नियंत्रण का पालन किया जाता है। दोनो ही पारिवारिक वातावरण में पोषित बच्चों के व्यक्तित्व, समायोजन क्षमता, नैतिक मूल्यों और उपलब्धियों में अन्तर आना स्वाभाविक है। व्यक्तिगत ध्यान और भावात्मक लगाव के अभाव में बालक घर की अपेक्षा शहरी आकर्षण व मनोरंजन को अधिक महसूस कर रहा है और अधिकांश समय घर से बाहर व्यतीत करने लगता है। जिसके कारण परिवार का नियंत्रण बालकों पर कम होता जा रहा है। वर्तमान परिदृश्य में संयुक्त परिवार धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं। एकल परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार में बच्चों को ज्यादा अनुभव देखने को मिलते हैं जिसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ता है। वहीं एकल परिवार में बच्चों को मुख्य केंद्रित रखते हुए पालन पोषण हाता है। शोधार्थी को यह जानने की अत्यंत उत्सुकता हुई कि एकल परिवार के

किशोर विद्यार्थी में संवेगात्मक परिपक्वता अधिक पाई जाती है या संयुक्त परिवार के किशोर विद्यार्थी में। अतः शोधार्थी ने उक्त समस्या का चयन किया।

प्रस्तावित शोध क्षेत्र में किए गए संबंधित साहित्य का अध्ययन एवं अन्वेषण

1.उपाध्याय, हिंदी एवं उनके साथियों (2020) ने जिला आनंद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की 14 से 17 वर्ष आयु वर्ग के संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया व उपकरण के रूप में तारा सबपंथी का संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.कौर, एम. (2001). ने किशोरावस्था की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 356 किशोर विद्यार्थी को चयनित किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि क्षेत्र, विद्यालय प्रकार व लिंग के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3.बाग, बी. (2008). ने किशोरावस्था की अभिभावकीय सहभागिता का संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य संबंध का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थी का चयन किया गया। शोधोपरांत पाया गया कि लिंग के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक सह संबंध नहीं है।

4. मलिक, रिंकू व उनके साथियों (2014). ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का संवेगात्मक परिपक्वता एवं उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर है।

5.कुमार, रणजीत एवं कुमार, रमेष (2019). ने छात्र व छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन किया। उद्देष्य के रुप में षैक्षिक वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य व संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का तुलनात्मक
अध्ययन करना। प्रस्तुत षोध हेतु सर्वेक्षण अनुसधान विधि का प्रयोग किया गया।न्यादर्ष के रुप में 100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया। षोधोपरान्त निश्कर्श यह प्राप्त हुआ कि षहरी क्षेत्र के किषोर छात्रो की षैक्षिक उपलब्धि पर संवेगों का प्रभाव नहीं पडता है। वरन उनकी षैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला चर समायोजन है क्योंकि प्राप्त परिणामों के आधार पर उच्च समायोजित छात्रों की षैक्षिक उपलब्धि में अधिकता है।

6.जॉवसन, मृदुला (2020). ने किषोरां के मध्य संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन और इसके महत्व पर अध्ययन किया। उददेष्य के रुप में किषोरो में संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर का अध्ययन करना और किषोरों पर परिवार के प्रकार और संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना। न्यादर्ष के रुप में 16 से 18 वर्श की आयु के उच्चतर माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया। परिवार का प्रकार, अभिभावकों की भूमिका सहकर्मी समूह किषोरों के संवेगात्मक परिपक्वता को प्रभावित करते हैं।

7.सैनी, सतीषचन्द्र (2019). ने किषोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता एवं षैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। निश्कर्श प्राप्त हुआ कि उच्च एवं निम्न बौद्धिक स्तर वाले किषोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में समानता है। सरकारी तथा गैर–सरकारी किषोर छात्र तथा छात्राओं के बौद्धिक स्तर का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव कम पड़ता है।

समस्या कथन
परिवार के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों के विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाएं

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों के मध्य कोई साथक अंतर नहीं है।

अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर–एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार

परतंत्र चर–संवेगात्मक परिपक्वता

अध्ययन विधि
प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श विधि
प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी ने सौदेश्य विधि द्वारा शासकीय माध्यमिक विद्यालय का चयन किया गया। विद्यार्थियों को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया गया।

न्यादर्श
प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने ग्वालियर नगर के मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल से मान्यता प्राप्त शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 के 400 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण
प्रस्तुत शोध के निमित्त उपकरण के रूप में तारा सबपंथी द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियां

प्रस्तुत षोध अध्ययन में प्रदत्तों के सारणीयन एवं निश्कर्श प्राप्त करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या

1. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के परिवार के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

उपर्युक्त उद्देश्य के परिप्रेक्ष्य में चयनित संपूर्ण प्रतिदर्श के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की परिवार के प्रकार के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता से संबंधित प्राप्तांकों को प्राप्त कर तुलनात्मक अध्ययन हेतु टी–मान का प्रयोग किया गया, जिनका प्रस्तुतीकरण तुलनात्मक रूप से अधोलिखित तालिका संख्या 1 में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका क्रमांक 1. एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान एवं सार्थकता स्तर।

क्र॰सं॰	परिवार के प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1	एकल परिवार	200	102.0	14.5	3.96	0.01 सार्थक है।
2.	संयुक्त परिवार	200	110.5	16.9		

तालिका सं॰1.के अवलोकन से विदित होता है कि संयुक्त परिवार के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिपक्वता पर प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान, एकल परिवार से उच्च है। तात्पर्य यह है कि माध्यमिक विद्यालयों के संयुक्त परिवार के विद्यार्थी अन्य परिवार के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सावेंगिक तौर पर परिपक्व होते हैं। दो मध्यमान समूह के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु टी–मान का प्रयोग किया गया, परिगणित टी–मान 3.98 प्राप्त हुआ, जिसका तात्पर्य है कि संयुक्त परिवार व एकल परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि संयुक्त परिवार में रहने वाले किशोर को बचपन से ही किसी भी चीज के लिए कई बार मनमानी जिद करने पर भी उसे परिवार के अन्य सदस्य (चाचा, बुआ, ताऊ, मामा, मौसी, नाना, नानी, बाबा, दादी बड़ा भाई, बड़ी बहन) द्वारा समझाने का प्रयास किया जाता है जिससे वह उचित प्रकार से मार्गदर्शित होता है। दैनिक क्रियाकलापों में परिवार के विभिन्न सदस्यों द्वारा की गई गतिविधियों से भी उसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। विशेषकर किशोरावस्था के विद्यार्थियों में इस समय विभिन्न शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं जिसे आसानी से मार्गदर्शित कर समायोजित किया जा सकता है। जबकि एकल परिवार में इस तरह की वातावरण की संभावनाएं कम पाई जाती हैं जिसके कारण संयुक्त परिवार के विद्यार्थी अधिक संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते हैं। उक्त तथ्य की पुष्टि रावत, चंदा एवं सिंह, रितु (2017) के शोध अध्ययन से भी हो रही है। उपर्युक्त तालिका में प्रस्तुत परिणाम का गहनता से अध्ययन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि अतः शोध परिकल्पना ''शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के एकल परिवार व संयुक्त परिवार के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

2. परिवार के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयाम का तुलनात्मक अध्ययन।

पुनः यहां प्रश्न उठता है कि क्या एकल परिवार व संयुक्त परिवार के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में विभिन्न आयामों के आधार पर कोई अंतर है या समान है। उक्त तथ्य को जानने हेतु एकल परिवार व संयुक्त परिवार के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका क्रमांक 2. एकल एवं संयुक्त परिवार के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयाम संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान एवं सार्थकता स्तर।

क्र.सं.	संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम	परिवार के प्रकार	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन मान	टी.मान	सार्थकता स्तर
1	आत्मज्ञान	एकल	200	22.02	3.54	3.56	0.01 सार्थक है।
		संयुक्त	200	19.47	4.41		
2	आत्मविश्वास	एकल	200	19.09	3.59	2.99	0.01 सार्थक है।
		संयुक्त	200	21.50	4.99		
		एकल	200	14.46	5.71		0.05 सार्थक है।

3	वास्तविकता के प्रति स्वीकृति	संयुक्त	200	17ण्92	3ण्07	2ण्98	
4	आत्म नियंत्रण	एकल	200	14ण्89	1ण्79	2ण्61	0ण्05 सार्थक हैं।
		संयुक्त	200	16ण्36	2ण्66		
5	सामाजिक समायोजन	एकल	200	18ण्35	3ण्95	3ण्26	0ण्01 सार्थक हैं।
		संयुक्त	200	22ण्66	6ण्76		
6	निरंतरता	एकल	200	22ण्28	3ण्09	1ण्14	0ण्05 सार्थक नहीं हैं।
		संयुक्त	200	15ण्23	2ण्94		

उपर्युक्त तालिका का गहन अध्ययन करने पर विदित होता है कि संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम आत्मज्ञान, निरंतरता के अलावा आत्मविश्वास, वास्तविकता के प्रति स्वीकृति, आत्म नियंत्रण एवं समाजिक समायोजन का एकल परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार का मध्यमान मूल्य उच्च है। साथ ही निरंतरता आयाम के अलावा संवेगात्मक परिपक्वता के सभी आयामों का दोनों समूह के मध्य सार्थकता स्तर पर सार्थक है। तात्पर्य यह है कि संयुक्त परिवार के किशोरों में संवेगात्मक परिपक्वता एकल परिवार की तुलना में उच्च है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि संयुक्त परिवार में रहने वाले किशोर पर परिवार के विभिन्न सदस्यों द्वारा लक्ष्य या आवश्यकता से प्राप्त की गई सफलता या असफलता का उनकी मनः स्थिति को प्रभावित करते हैं, परिवार में सदस्य संख्या ज्यादा होने के कारण सभी को अपनी आयु व स्थिति के आधार पर कार्यभार व उत्तरदायित्व सौंपा जाता है अधिकतर उत्तर दायित्व का निर्वहन करते समय किशोर में जिम्मेदारी का एहसास होन लगता है, फलस्वरूप वे संवेगात्मक रूप से परिपक्व अधिक दृष्टिगोचर होते है। फलस्वरुप एकल परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार में रहने वाले किशोर में वास्तविकता के प्रति स्वीकृति, समाज में स्वयं को समायोजित करने की प्रवृत्ति से उनमें स्वयं के प्रति आत्मविश्वास विकसित होता है। साथ ही समय–समय पर विपरीत परिस्थिति होने पर स्वयं को भी आत्म नियंत्रित कर पाते हैं। उपर्युक्त तालिका में प्रस्तुत परिणाम का गहनता से अध्ययन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि अतः शोध परिकल्पना शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। को अस्वीकृत किया जाता है। उक्त तथ्य की पुष्टि लक्ष्मी, रानी एवं कुमारी, विभा (2019) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि पुरुष एवं महिला किशोर का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य कोई संबंध नहीं है। संवेगात्मक परिपक्वता एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक संबंध है। जबकि संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों का महिला एवं पुरुष किशोर के मध्य कोई सार्थक सह संबंध नहीं है। के शोध अध्ययन से भी हो रही है।

निष्कर्ष

1.एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

2.एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया कि निरंतरता आयाम के अलावा सभी आयाम सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण |दरनण;2000द्धण्श्ं बवउचंतंजपअम `जनकल व िमउवजपवदंस उंजनतपजल पद तमसंजपवद जव पदजमससपहमदबम ंदक `मगश्श् डण्मक क्पेमतजंजपवदए च्नदरंइ न्दपअमतेपजल बिंदकपहंतीण

2ण तंदप सीउप – झनउंतप टपईींण;2019द्धण्श्मउवजपवदंस उंजनतपजल ंदक थ्िंउपसल मदअपतवदउमदजश्श पदजमतदंजपवदंस हमदमतंस व िबतमंजपअम तमेमंतबी जीवनहीजे ;प्श्रब्त्द्ध |द पदजमतदंजपवदंस वचमद ंबबमेे चममत तमअपमूमक रवनतदंसण्अवसण्7ए प्ेनम 4ए छवअमउइमत 2019ण्पै्छ 2320. 2882

3ण त्रमींूतप त्त ंदक त्र श्रवीद ;2015द्धण श्श्व्यमदपदह वि दमू पदेपहीजे वित जीम तमेमंतबीमतेरू । क्पेबतपचजपअम `जनकल वद मउवजपवदंस उंजनतपजलश्श्प्दजपसपीमक इल प्श्रम्डत्ण्अवसण्5ण्पेनम11ण छवअमउइमत 2015ण्चैछ 2249.8672ण

4ण त्दप ूतनचं ंदक ड्रंतदं चंतजीलएश्रवीदण्;2018द्धण श्श्म्उवजपवदंस उंजनतपजल ंउवदह ंकवसमेबमदज `जनकमदजेष्ठ च्नइसपीमक इल प्श्रम्ज्व्त्ण्अवसण्5ण पेनमे10ण व्बजवइमत 2018ण ैछ.2349.5162ण

5ण पदहीए ।ण्– ठतववजंए ।ण;1992द्धण्ैवबपंसदृच्मतेवदंस टंतपंइसमे ंदक म्गंउपदंजपवद ।दगपमजलण श्रतण वि प्दकपंद ।बंकमउपब वि ।चचसपमक च्ेलबीवसवहलएटवसण्8ए चचण्73.78ण

6ण टंससनतपए ण्;2003द्धण्मिबज वि च्तमदज बेपसक त्मसंजपवदेीपच वद म्उवजपवदंस डंजनतपजल वि मदपवत ैमबवदकंतल ैबीववस ैजनकमदजेण न्दचनइसपीमक डण्म्कण क्पेमतजंजपवदए च्नदरंइ न्दपअमतेपजलण् बैंदकपहंतीण

7ण टमतउंएत्ण्ैण;1977द्धण ।ेजनकल वि ैबीववस स्मंतदपदह ` थ्नदबजपवद वि ैवबपव.म्उवजपवदंस बसपउंजम वि जीम ब्संेेत्ववउण म्कनण्ए त्ंरेजींद न्दपअमतेपजल

8ण पदहीए अपदपजंण;2015द्धण म्उवजपवदंस डंजनतपजल बतवेे ळमदकमत ंदक स्वबंसम वि म्कनबंजपवदण जीम प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि प्दकपंद च्ेलबीवसवहलण टवसण 2ण प्ेनम 2ण प्ैैछ 2348दृ5396

9ण न्चंकीलंए भ्मदसमल – मजण्ंस ;2020द्धण्श्।जनकल वद मउवजपवदंस उंजनतपजल पद ंदक ंकवसमेबमदज हतवनच `जनकलपदह ंज ंपिहीमत मबवदकंतल `बीववस पद ूमेजमतद प्दकपंष्ठ च्नइसपीमक इल जीम पदजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि प्दकपंद चलबीवसवहल 8;4द्धरू72.77ण्त्मिततमक वद क्वप 20215ध्20804011ण